Empire

मराठा साम्राज्य

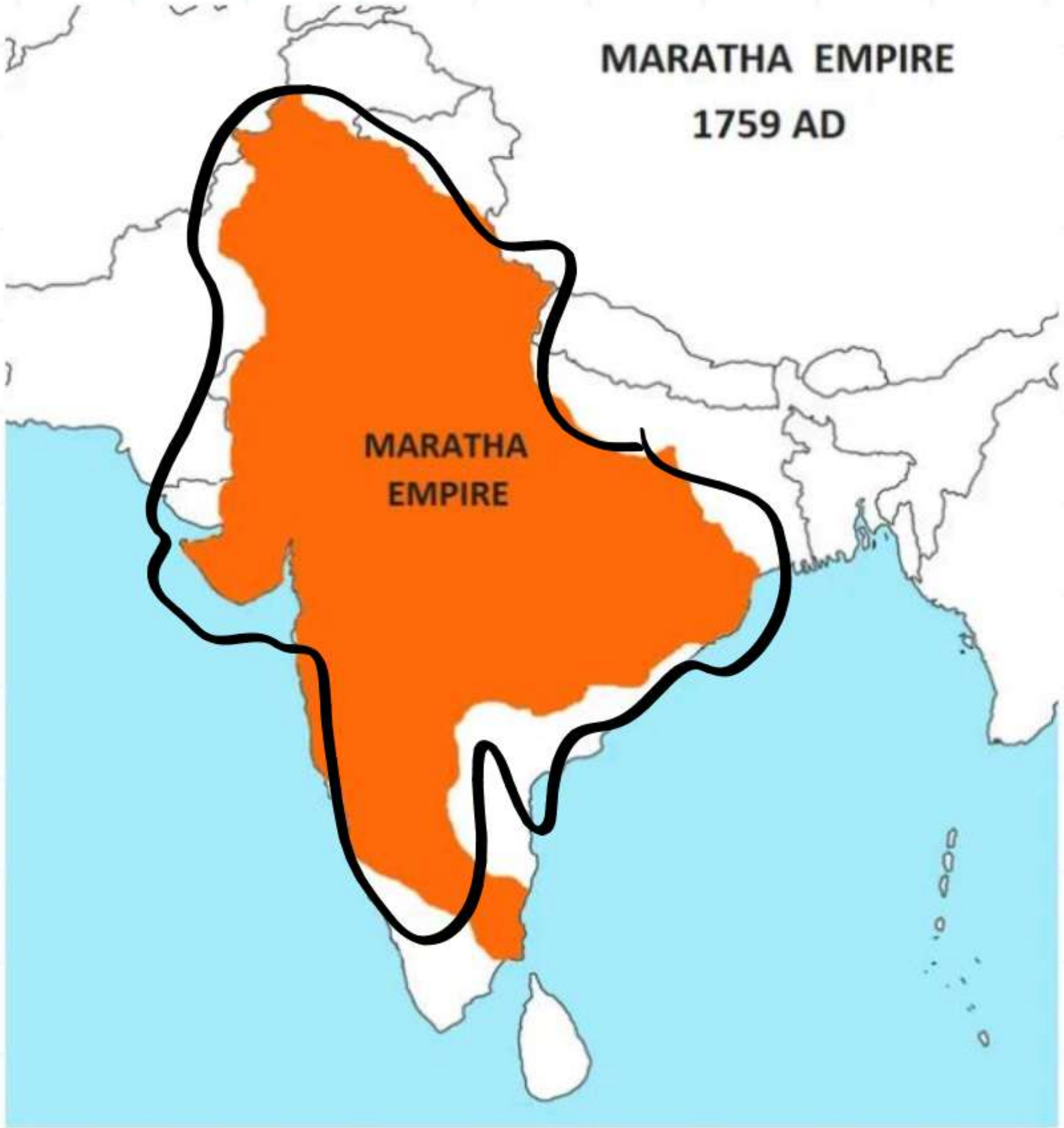
MARATHA EMPIRE
1759 AD
MARATHA
EMPIRE

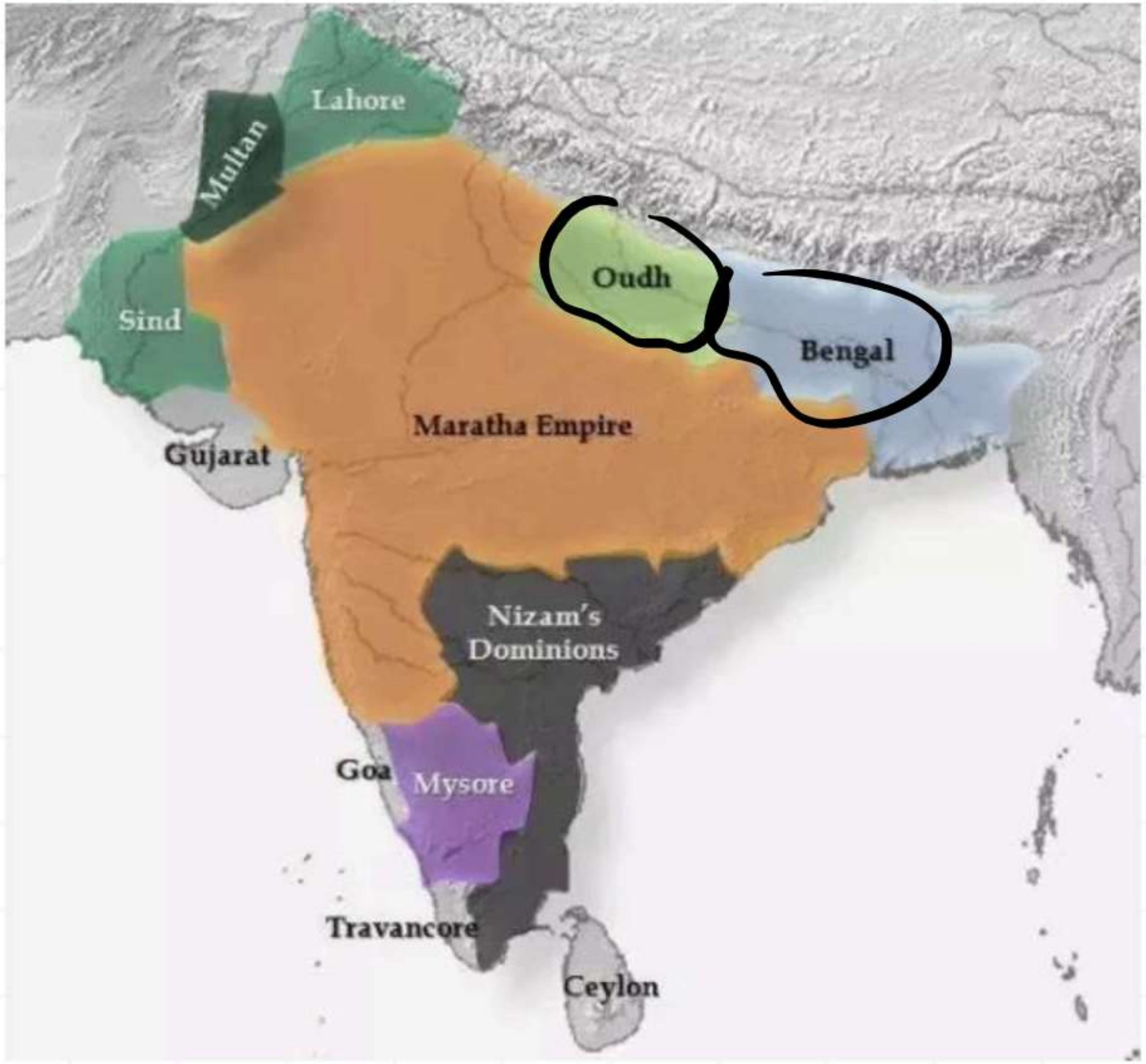
Lahore
Multan
Sind
Oudh
Bengal
Gujarat
Maratha Empire
Nizam's
Dominions
Goa
Mysore
Travancore
Ceylon

SHAJI BHONSLE

1630-1680

Chhatrapati Shivaji Maharaj

स्वराज

स्वयं+राज्य

Sambhaji

Shahu

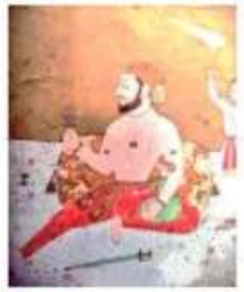

Rajaram I

Shivaji II

Rajaram II

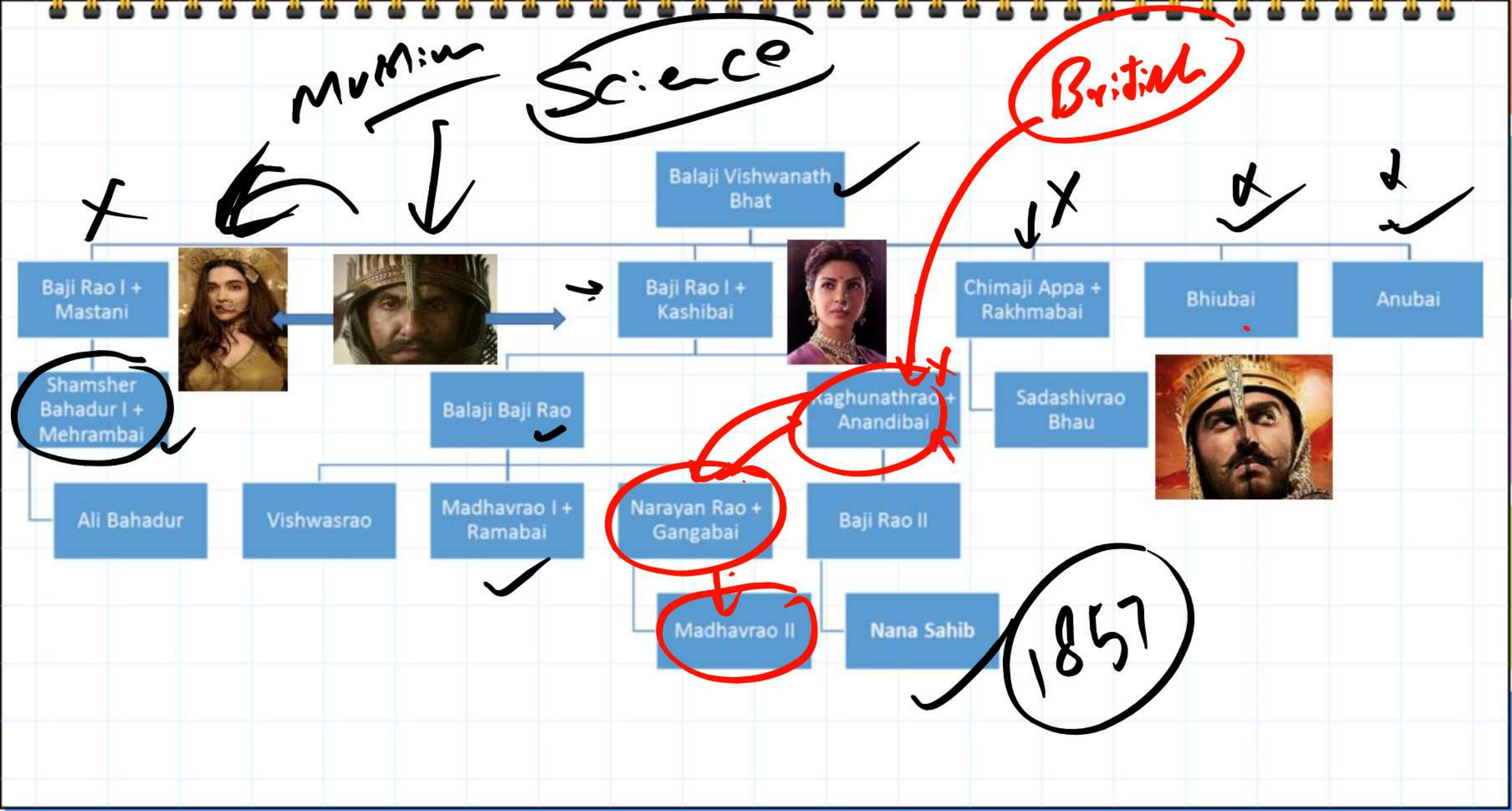

Science
British
Balaji Vishwanath Bhat
Baji Rao I + Mastani
Baji Rao I + Kashibai
Chimaji Appa + Rakhmabai
Bhiubai
Anubai
Shamsher Bahadur I + Mehrambai
Balaji Baji Rao
Raghunathrao + Anandibai
Sadashivrao Bhau
Ali Bahadur
Vishwasrao
Madhavrao I + Ramabai
Narayan Rao + Gangabai
Baji Rao II
Madhavrao II
Nana Sahib
1857

Emergence of Marathas

Shivneri
Raigarh

- The Marathas emerged as a formidable power in the 17th century in the Deccan region (modern-day Maharashtra). / मराठा 17वीं शताब्दी में दक्कन क्षेत्र (आधुनिक महाराष्ट्र) में एक दुर्जय शक्ति के रूप में उभरे।
- Founder: Chhatrapati Shivaji Maharaj (1630–1680), who established Hindavi Swarajya by challenging Mughal and Bijapur rule. / संस्थापक: छत्रपति शिवाजी महाराज (1630-1680), जिन्होंने मुगल और बीजापुर शासन को चुनौती देकर हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की।
- Geographical Extent: Initially centered in Maharashtra, the Maratha influence expanded to parts of Karnataka, Madhya Pradesh, and beyond. / भौगोलिक विस्तार: प्रारंभ में महाराष्ट्र में केंद्रित, मराठा प्रभाव कर्नाटक, मध्य प्रदेश और उसके बाहर के कुछ हिस्सों तक फैल गया।
- Coronation & Title: Shivaji assumed the title Chhatrapati in 1674 at Raigad Fort, marking the formal establishment of the Maratha Empire/ राज्याभिषेक और उपाधि: शिवाजी ने 1674 में रायगढ़ किले में छत्रपति की उपाधि धारण की, जिससे मराठा साम्राज्य की औपचारिक स्थापना हुई।

SHIVAJI MAHARAJ: ARCHITECT OF MARATHA EMPIRE'S RISE AND TRIUMPH (1630-1680)

- Born at Shivneri fort./ शिवनेरी किले में जन्मे।
- Father Shahaji Bhosle initially served Nizam ruler of Ahmednagar. Later he joined the Bijapur/ पिता शाहजी भोसले ने शुरुआत में अहमदनगर के निज़ाम शासक की सेवा की। बाद में वे बीजापुर में शामिल हो गए।
- Mother Jijabai, initial teacher of Shivaji Maharaj./ माता जीजाबाई शिवाजी महाराज की प्रारंभिक गुरु थीं।
- He inherited the jagir of Poona from his father in 1637. / उन्हें 1637 में अपने पिता से पूना की जागीर विरासत में मिली।
- At the age of 16 he captured the Torna fort, followed by many more forts./ 16 साल की उम्र में उन्होंने तोरणा किले पर कब्जा कर लिया, और उसके बाद कई और किले जीते।
- He created an independent Maratha kingdom with Raigad as its capital/ उन्होंने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाकर एक स्वतंत्र मराठा राज्य की स्थापना की।
- At the Battle of Pratapgarh (1659) he killed Afzal Khan (Adil shah's general)/ प्रतापगढ़ के युद्ध (1659) में उन्होंने अफ़ज़ल खान (आदिल शाह के सेनापति) को मार डाला।

Near Kolhapur

- The Battle of Pavan Khind occurred on July 13, 1660, with Maratha leaders facing Siddi Masud of the Bijapur Sultanate./ पावन खिंड का युद्ध 13 जुलाई, 1660 को हुआ था, जिसमें मराठा नेताओं का सामना बीजापुर सल्तनत के सिद्दी मसूद से हुआ था।
- The battle resulted in the defeat of the Marathas but the Bijapur Sultanate did not accomplish its overall objectives. / इस युद्ध में मराठों की हार हुई, लेकिन बीजापुर सल्तनत अपने समग्र उद्देश्यों को पूरा नहीं कर पाई।
- Ghod Khind was later referred to as Pavan Khind./ घोड़ खिंड को बाद में पावन खिंड कहा गया।

- Aurangzeb called Chhatrapati Shivaji Maharaj and his son Sambhaji to his court in Agra in 1666./ औरंगज़ेब ने 1666 में छत्रपति शिवाजी महाराज और उनके पुत्र संभाजी को आगरा में अपने दरबार में बुलाया।
- During the proceedings, Chhatrapati Shivaji was dishonoured and subsequently placed under house arrest. / कार्यवाही के दौरान, छत्रपति शिवाजी का अपमान किया गया और बाद में उन्हें नज़रबंद कर दिया गया।
- However, on August 17, 1666, Chhatrapati Shivaji Maharaj escaped with his son Sambhaji./ हालाँकि, 17 अगस्त, 1666 को छत्रपति शिवाजी महाराज अपने पुत्र संभाजी के साथ भाग निकले।

- Treaty of Purander (1665)/ पुरंदर की संधि (1665)
  - Signed between Raja Jai Singh (under Aurangzeb) and Shivaji./ राजा जय सिंह (औरंगज़ेब के अधीन) और शिवाजी के बीच हस्ताक्षरित।
  - Shivaji ceded some forts to Mughals & visited Agra to meet Aurangzeb./ शिवाजी ने कुछ किले मुगलों को सौंप दिए और औरंगज़ेब से मिलने आगरा गए।

- He defeated Mughals in Battle of Salher (1672). He was crowned & assumed the title Maharaja Chhatrapati in 1674 at Raigad fort./ उन्होंने सलहेर के युद्ध (1672) में मुगलों को हराया। 1674 में रायगढ़ किले में उनका राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने महाराजा छत्रपति की उपाधि धारण की।
- He died in 1680 / 1680 में उनका निधन हो गया।

रायगढ़ किला

SHIVAJI'S ADMINISTRATION

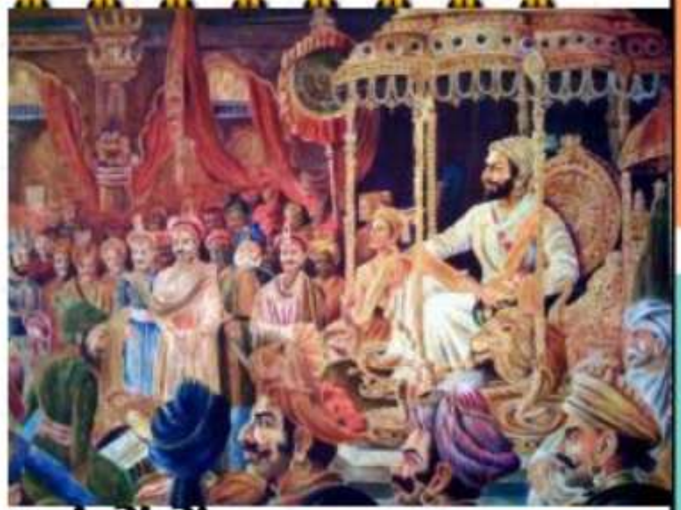

- He divided the territory into three provinces. Provinces were divided into Prants which were subdivided into Parganas or Tarafs./ उन्होंने क्षेत्र को तीन प्रांतों में विभाजित किया। प्रांतों को प्रांतों में विभाजित किया गया था, जिन्हें परगना या तरफ़ में विभाजित किया गया था।
- Shivaji had well organized Army & Navy. The regular army was called Paga, while the loose auxiliaries called silahdars & were supervised by havildars./ शिवाजी के पास अच्छी तरह से संगठित सेना और नौसेना थी। नियमित सेना को पगा कहा जाता था, जबकि ढीले सहायक बलों को सिलहदार कहा जाता था और उनकी देखरेख हवलदार करते थे।
- He was assisted by a council of ministers called "Ashtapradhan" Mandal./ उन्हें "अष्टप्रधान" मंडल नामक मंत्रिपरिषद द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।

Ashtapradhan

Post / पद	Function / कार्य
Peshwa (Mukhya Pradhan) / पेशवा (मुख्य प्रधान)	Finance & general administration. Later became prime minister / वित्त व सामान्य प्रशासन। बाद में प्रधान मंत्री बने
Senapati (Sar-i-Naubat) / सेनापति (सर-ए-नौबत)	Military commander / सैन्य प्रमुख
Majumdar (Amatya) / माजुमदार (अमात्य)	Accountant General / महालेखाकार
Waqeanavis (Mantri) / वक़ेनवीस (मंत्री)	Intelligence, posts and household affairs / खुफ़िया कार्य, डाक व आंतरिक कार्य
Sachiv (Surnavis) / सचिव (सुरनवीस)	Correspondence / पत्राचार
Dabir (Sumant) / दाबीर (सुमंत)	Foreign minister & Master of ceremonies / विदेश मंत्री एवं समारोह प्रमुख
Nyayadhish / न्यायाधीश	Justice / न्याय
Panditrao (Sadar) / पंडितराव (सदार)	High Priest, managing internal religious matters / उच्च पुजारी, धार्मिक मामलों का प्रमुख

Revenue system of Maratha Empire

- The revenue system of Shivaji was based on that of Malik Amber of Ahmednagar./ शिवाजी की राजस्व प्रणाली अहमदनगर के मलिक अंबर की प्रणाली पर आधारित थी।
- Jagirdari abolished and introduced Ryotwari system./ जागीरदारी प्रथा समाप्त की गई और उसकी जगह रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू की गई।
- Land was measured using measuring rod called Kathi./ भूमि का मापन काठी नामक मापदंड से किया जाता था।
- Discouraged revenue farming/ शिवाजी ने राजस्व खेती को हतोत्साहित किया।
- Chauth (1/4th of land revenue) paid to Marathas to avoid Maratha raid./ चौथ (भूमि राजस्व का 1/4 हिस्सा) मराठों को मराठा छापों से बचने के लिए दिया जाता था।
- Sardeshmukhi was additional levy of ten percent (1/10 of standard land revenue) on lands over which Marathas claimed hereditary rights./ सरदेशमुखी एक अतिरिक्त 10% कर था (मानक भूमि राजस्व का 1/10), उन भूमियों पर जिन पर मराठों का पैतृक अधिकार माना जाता था।
- Reduced the power of existing Deshmukhs and Kulkarnis./ शिवाजी ने मौजूदा देशमुखों और कुलकर्णियों की शक्ति कम कर दी।
- Appointed own revenue officer called Karkuns./ शिवाजी ने अपने राजस्व अधिकारी कारकून नियुक्त किए।

Sambhaji Maharaj (1680 - 1689)

- Sambhaji was the **son of Shivaji Maharaj**, the first ruler/Chhatrapati of the Maratha Empire and his first wife **Saibai**./ संभाजी, मराठा साम्राज्य के प्रथम शासक/ छत्रपति शिवाजी महाराज और उनकी पहली पत्नी सईबाई के पुत्र थे।

- Losing his mother at the age of two, he was raised by Shivaji's mother Jijabai. When he was nine years of age, he was sent to live as a political hostage at the palace of Raja Jai Singh I of Amber. Shivaji had to do this as surety that he would comply with the Treaty of Purandar he signed with the Mughals in 1665./ दो वर्ष की आयु में अपनी माँ को खो देने के बाद, उनका पालन-पोषण शिवाजी की माँ जीजाबाई ने किया। जब वे नौ वर्ष के थे, तब उन्हें आमेर के राजा जय सिंह प्रथम के महल में एक राजनीतिक बंधक के रूप में रहने के लिए भेज दिया गया था। शिवाजी को यह ज़मानत के रूप में करनी पड़ी थी कि वे 1665 में मुगलों के साथ की गई पुरंदर की संधि का पालन करेंगे।

- Sambhaji was thus a Mansabdar of the Mughals. In 1666, Shivaji and Sambhaji presented themselves at the court of the Mughal Emperor Aurangzeb. Aurangzeb put the duo under house arrest. Two months later, father and son escaped./ इस प्रकार संभाजी मुगलों के मनसबदार थे। 1666 में, शिवाजी और संभाजी मुगल सम्राट औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुए। औरंगजेब ने दोनों को नजरबंद कर दिया। दो महीने बाद, पिता-पुत्र भाग निकले।

- Both sides reconciled following which there was a brief period of friendship between 1666 and 1670. During this period, Sambhaji fought alongside his father to support the Mughals against the Bijapur Sultan. / दोनों पक्षों में सुलह हो गई जिसके बाद 1666 और 1670 के बीच कुछ समय के लिए मित्रता का दौर चला। इस दौरान, संभाजी ने अपने पिता के साथ मिलकर बीजापुर के सुल्तान के विरुद्ध मुग़लों का समर्थन किया।

- In 1678, Shivaji kept Sambhaji imprisoned at the Panhala Fort to curtail his bad and irresponsible behaviour./ 1678 में, शिवाजी ने संभाजी के बुरे और गैर-ज़िम्मेदाराना व्यवहार को रोकने के लिए उन्हें पन्हाला किले में कैद कर लिया।

- After Shivaji died in April 1680, there were attempts by some ministers in the Maratha court to crown Sambhaji's half-brother Rajaram as the king. Rajaram was Shivaji's second son from his wife Soyarabai./ अप्रैल 1680 में शिवाजी की मृत्यु के बाद, मराठा दरबार के कुछ मंत्रियों ने संभाजी के सौतेले भाई राजाराम को राजा बनाने का प्रयास किया। राजाराम, शिवाजी की पत्नी सोयराबाई से उत्पन्न दूसरे पुत्र थे।

- Sambhaji, however, got wind of the plot and soon took possession of the forts at Panhala and Raigad. He was crowned the Chhatrapati on 20th July 1680. Soon after, he imprisoned Rajaram, Soyarabai and Rajaram's wife. He also executed all the ministers who had conspired against him./ हालाँकि, संभाजी को इस षड्यंत्र की भनक लग गई और उन्होंने शीघ्र ही पन्हाला और रायगढ़ के किलों पर कब्जा कर लिया। 20 जुलाई 1680 को उन्हें छत्रपति का ताज पहनाया गया। इसके तुरंत बाद, उन्होंने राजाराम, सोयराबाई और राजाराम की पत्नी को कैद कर लिया। उन्होंने उन सभी मंत्रियों को भी फाँसी दे दी जिन्होंने उनके विरुद्ध षड्यंत्र रचा था।

- He signed a treaty with the English in 1684 realising the need for English weapons and gunpowder./ अंग्रेजी हथियारों और बारूद की ज़रूरत को समझते हुए, उन्होंने 1684 में अंग्रेजों के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किए।

- Sambhaji also attempted to take on Mysore which was ruled by Chikkadevaraja Wodeyar./ संभाजी ने मैसूर पर भी कब्जा करने का प्रयास किया, जिस पर चिक्कदेवराज वोडेयार का शासन था।

- In 1687, the Battle of Wai was fought between the Maratha and the Mughal forces. The battle was fought in the dense forests of Wai and Mahabaleshwar. Even though the Mughals were defeated in the battle, the Marathas lost their commander-in-chief Hambirao Mohite/
- 1687 में, मराठा और मुगल सेनाओं के बीच वाई का युद्ध लड़ा गया। यह युद्ध वाई और महाबलेश्वर के घने जंगलों में लड़ा गया था। हालाँकि इस युद्ध में मुगलों की हार हुई, लेकिन मराठों ने अपने सेनापति हंबीराव मोहिते को खो दिया।

- Sambhaji's position weakened and people in his own court and family spied upon him./ संभाजी की स्थिति कमज़ोर हो गई और उनके अपने दरबार और परिवार के लोगों ने उन पर जासूसी की।
- In February 1689, Sambhaji was captured along with 25 of his counsellors at Sangameshwar./ फरवरी 1689 में, संभाजी को उनके 25 सलाहकारों के साथ संगमेश्वर में बंदी बना लिया गया।
- Sambhaji was taken to Bahadurgad in Ahmednagar District by the Mughals. was humiliated and tortured before being executed./ संभाजी को मुग़लों द्वारा अहमदनगर ज़िले के बहादुरगढ़ ले जाया गया। फाँसी देने से पहले उन्हें अपमानित और प्रताड़ित किया गया।
- Sambhaji is also known as 'Dharmaveer'./ संभाजी को 'धर्मवीर' के नाम से भी जाना जाता है।

SHAHU (1707-1749)

- Shahu's reign saw the rise of Peshwas & reducing Bhosale's to mere figureheads./ शाहू के शासनकाल में पेशवाओं का उदय हुआ और भोसले महज नाममात्र के रह गए।

- By the time of Rajaram II/Ram raja the power of Chhatrapati was almost overshadowed by that of Peshwa./ राजाराम द्वितीय/राम राजा के समय तक छत्रपति की शक्ति पेशवा की शक्ति से लगभग लुप्त हो गई थी।
- Battle of Khed (1707): It was fought between Shahu and Tarabai's forces, where Shahu emerged victorious, leading to his recognition as the Chhatrapati of the Marathas./खेड का युद्ध (1707): यह युद्ध शाहू और तराबाई की सेना के बीच हुआ था, जिसमें शाहू की विजय हुई और उन्हें मराठों के छत्रपति के रूप में मान्यता मिली।

BALAJI VISHWANATH (1713-1720):

FIRST PESHWA

- He started his career as a small revenue official. He was given a of Sena Karte in 1708 by Shahu./ उन्होंने अपना करियर एक छोटे राजस्व रूप में शुरू किया। 1708 में शाहू ने उन्हें सेना कर्ते की उपाधि दी।
- He became a Peshwa in 1713 & made the post most important and powerful as well as hereditary./ 1713 में वे पेशवा बने और इस पद को अत्यंत महत्वपूर्ण, शक्तिशाली और वंशानुगत बना दिया।
- In 1719, Balaji Viswanath obtained important rights from Mughal emperor Farukh Siyar, who recognized Shahu as king. / 1719 में, बालाजी विश्वनाथ ने मुगल सम्राट फारुख सियार से महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त किए, जिन्होंने शाहू को राजा के रूप में मान्यता दी।
- He helped Shahu become the Maratha king by gaining support from other Maratha leaders./ उन्होंने अन्य मराठा नेताओं का समर्थन प्राप्त करके शाहू को मराठा राजा बनने में मदद की।

Baji Rao I (1720-1740)

- Baji Rao was the eldest son of Balaji Viswanath and became Peshwa at the young age of twenty. / बाजीराव बालाजी विश्वनाथ के सबसे बड़े पुत्र थे और बीस वर्ष की अल्पायु में पेशवा बन गए।
- Under his leadership, Maratha's power reached its peak./ उनके नेतृत्व में मराठा शक्ति अपने चरम पर पहुँच गई।
- He established a confederacy among the Maratha chiefs, granting each chief the autonomy to govern their designated territory independently/ उन्होंने मराठा सरदारों के बीच एक संघ स्थापित किया, जिसमें प्रत्येक सरदार को अपने निर्दिष्ट क्षेत्र पर स्वतंत्र रूप से शासन करने की स्वायत्तता प्रदान की गई।
- He said about Mughal: "Let us strike at the trunk of the withering tree and the branches will fall of themselves"./ उन्होंने मुगलों के बारे में कहा: "हम मुरझाते हुए पेड़ के तने पर प्रहार करें और शाखाएँ अपने आप गिर जाएँगी।"

- This approach enabled numerous Maratha families to gain prominence and authority across India, including the Gaekwads in Baroda, the Bhonsles in Nagpur, the Holkars in Indore, the Scindias in Gwalior, and the Peshwas in Poona./ इस दृष्टिकोण ने कई मराठा परिवारों को पूरे भारत में प्रमुखता और अधिकार प्राप्त करने में सक्षम बनाया, जिनमें बड़ौदा में गायकवाड़, नागपुर में भोंसले, इंदौर में होल्कर, ग्वालियर में सिंधिया और पूना में पेशवा शामिल थे।

- During Baji Rao I's reign, he is said to have fought over 40 battles, including the"Battle of Palkhed" (1728), the "Battle of Delhi" (1737), and the "Battle of Bhopal" (1737)./ कहा जाता है कि बाजीराव प्रथम के शासनकाल के दौरान, उन्होंने "पालखेड़ का युद्ध" (1728), "दिल्ली का युद्ध" (1737) और "भोपाल का युद्ध" (1737) सहित 40 से अधिक लड़ाइयाँ लड़ीं।

Balaji Baji Rao (1740-1761)

- Balaji Baji Rao, also known as Nanasaheb, succeeded his father as Peshwa at just nineteen./ बालाजी बाजी राव, जिन्हें नानासाहेब के नाम से भी जाना जाता है, मात्र उन्नीस वर्ष की आयु में अपने पिता के उत्तराधिकारी के रूप में पेशवा बने।
- In 1752, the Peshwa agreed to protect the Mughal Empire in exchange for collecting Chauth from northwest provinces and total revenue from Agra and Ajmer./ 1752 में, पेशवा ने उत्तर-पश्चिमी प्रांतों से चौथ और आगरा व अजमेर से कुल राजस्व वसूलने के बदले में मुगल साम्राज्य की रक्षा करने पर सहमति व्यक्त की।
- Defeat at the 3rd Battle of Panipat 1761 by Ahmad Shah Durrani checked the expansion of Marathas and fragmented the empire./ 1761 में पानीपत के तीसरे युद्ध में अहमद शाह दुर्रानी की हार ने मराठों के विस्तार को रोक दिया और साम्राज्य को खंडित कर दिया।
- He and his son Vishwas Rao died in Panipat battle./ पानीपत युद्ध में उनकी और उनके पुत्र विश्वास राव की मृत्यु हो गई।
- Successor: Madhav Rao, Narayan Rao, Sawai Madhav Rao, Baji Rao II./ माधव राव, नारायण राव, सवाई माधव राव, बाजी राव द्वितीय।

Ahmadshah Abdali

Ahmad Shah Durrani, also known as Ahmad Khan Abdali, was the founder of the Durrani Empire and is regarded as the founder of the modern state of Afghanistan.

अहमद शाह दुर्रानी, जिन्हें अहमद खान अब्दाली के नाम से भी जाना जाता है, दुर्रानी साम्राज्य के संस्थापक थे और उन्हें आधुनिक अफगानिस्तान राज्य का संस्थापक माना जाता है।

Ahmad shah Abdali

- **The primary object of his invasion was to plunder India's wealth. India, at that time, was known for its wealth. Like Muhammad of Ghor, the object of his invasions was to establish political hegemony in India as he was quite familiar with the weak Mughal administration of Delhi./** उसके आक्रमण का मुख्य उद्देश्य भारत की संपत्ति लूटना था। उस समय भारत अपनी संपत्ति के लिए जाना जाता था। मुहम्मद ग़ौर की तरह, उसके आक्रमणों का उद्देश्य भारत में राजनीतिक आधिपत्य स्थापित करना था क्योंकि वह दिल्ली के कमज़ोर मुग़ल प्रशासन से भली-भाँति परिचित था।

- **Both objectives were met through the raids (taking the wealth and destroying sacred places belonging to the Indians) and causing political issues in India. /** दोनों उद्देश्य छापे (भारतीयों की संपत्ति लूटना और उनके पवित्र स्थलों को नष्ट करना) और भारत में राजनीतिक समस्याएँ पैदा करके पूरे हुए।

Madhavrao I (1761-72)

- **16 yrs old Madhavrao I became the Peshwa of Maratha Empire./** 16 वर्षीय माधवराव प्रथम मराठा साम्राज्य के पेशवा बने।
- **In 1763, He has defeated Nizam(Battle of Rakhsasbhuvan)./** 1763 में उन्होंने निज़ाम (राक्षसबुहान का युद्ध) को हराया।
- **In 1764, 1767, 1771, 1772 He defeated 'Haider Ali'./** 1764, 1767, 1771, 1772 में उन्होंने 'हैदर अली' को हराया।
- **In 1772, Mahadji Sindhiya helped Mughals to establish in Delhi. On other hand took 40lakh rupees and Manikpur. /** 1772 में महादजी सिंधिया ने मुगलों को दिल्ली में स्थापित होने में मदद की। बदले में उन्होंने 40 लाख रुपये और मानिकपुर ले लिया।

Mahadaji Shinde also spelled as Mahadji Scindia was a Maratha Statesman and ruler of Gwalior in Northern India. He was the fifth and the youngest son of Ranoji Rao Scindia, the founder of the Sindhia dynasty.

महादजी शिंदे, जिन्हें महादजी सिंधिया भी कहा जाता है, एक मराठा राजनेता और उत्तर भारत के ग्वालियर के शासक थे। वे सिंधिया राजवंश के संस्थापक राणोजी राव सिंधिया के पाँचवें और सबसे छोटे पुत्र थे।

Narayanrao (1772-73)

- **Madhavrao's brother Narayanrao became the Peshwa after the death of Madhavrao./** माधवराव की मृत्यु के बाद उनके भाई नारायणराव पेशवा बने।
- **But after 9months, his uncle 'Raghunathrao' murdered him./** लेकिन नौ महीने बाद, उनके चाचा 'रघुनाथराव' ने उनकी हत्या कर दी।

Raghunath Raghoba (1773)

- Marathas did not accept Raghunath Raghoba as their Peshwa. / मराठों ने रघुनाथ राघोवा को अपना पेशवा स्वीकार नहीं किया।
- As a result, son of Narayanrao 'Madhavrao II' became new Peshwa./ परिणामस्वरूप, नारायणराव के पुत्र 'माधवराव द्वितीय' नए पेशवा बने।
- Raghunath Raghoba signed a 'Surat treaty' with Britishers in 1775 against Maratha Empire. / रघुनाथ राघोवा ने 1775 में मराठा साम्राज्य के विरुद्ध अंग्रेजों के साथ 'सूरत संधि' पर हस्ताक्षर किए।
- But Nana Fadnavis has signed 'Purandar Treaty (1776)' with Gov. Gen. Warren Hastings and consequently 'Surat Treaty' was suspended./ लेकिन नाना फड़नवीस ने गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स के साथ 'पुरंदर संधि (1776)' पर हस्ताक्षर किए और परिणामस्वरूप 'सूरत संधि' स्थगित कर दी गई।

Madhavrao Narayan (1774-96)

- During this period Madhavrao Narayan ruled with the pure help of 'Nana Fadnavis'./ इस अवधि के दौरान माधवराव नारायण ने नाना फड़नवीस की विशुद्ध सहायता से शासन किया।

- In 1796, He died./ 1796 में उनकी मृत्यु हो गई।

Bajirao II (1796-1818)

- This was the period of decline of Maratha Empire. / यह मराठा साम्राज्य के पतन का समय था।
- In 1796 AD after the death of Nana Fadnavis,' Sindhiya, Bhonsle and Gayakwad fought with each other for territories. / 1796 ई. में नाना फड़नवीस की मृत्यु के बाद, सिंधिया, भोंसले और गायकवाड़ ने क्षेत्रों के लिए आपस में युद्ध किया।
- In 1802, Bajirao II signed a 'treaty of Bassein' with Britishers and took the support of British Army in Poona./ 1802 में, बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों के साथ बसेन की संधि पर हस्ताक्षर किए और पुणे में ब्रिटिश सेना का समर्थन प्राप्त किया।
- Sindhiya, Bhonsle and Gayakwad opposed Bajirao II. But Lord Wallesley compelled them to accept treaty under subsidiary alliance./ सिंधिया, भोंसले और गायकवाड़ बाजीराव द्वितीय के खिलाफ थे। लेकिन लॉर्ड वेलेजली ने उन्हें मजबूर कर दिया कि वे सहायक संधि (Subsidiary Alliance) के तहत संधि स्वीकार करें।

Nana Sahib (1818-57)

- After the death of Bajirao II, Nana Sahib ruled./ बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के बाद नाना साहब ने शासन किया।
- After the death of Bajirao II, Nana Sahib has requested to British Government for Pension and Peshwa Post./ बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के बाद, नाना साहब ने ब्रिटिश सरकार से पेंशन और पेशवा पद के लिए अनुरोध किया।
- Lord Dalhousie denied his request, and finally in 1857 revolt he took part against British Empire./ लॉर्ड डलहोजी ने उनके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया और अंततः 1857 के विद्रोह में उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध भाग लिया।
- But unfortunately Maratha Empire came to an end./ लेकिन दुर्भाग्य से मराठा साम्राज्य का अंत हो गया।

The Nana Sahib, from an Original Drawing.

YOU